RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
जून
05
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

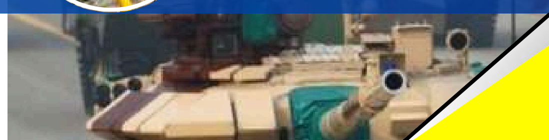

By Ankit Avasthi Sir

भारत को स्वदेशी समुद्री इंजन की जरूरत / India needs indigenous Marine Engines

संदर्भ:

भारत को जहाज निर्माण क्षेत्र में वास्तविक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और विदेशी निर्भरता को कम करने के लिए स्वदेशी समुद्री इंजनों (Indigenous Marine Engines) का विकास करना अत्यंत आवश्यक है।

तेजी से बढ़ता जहाज़ निर्माण क्षेत्र:

- भारत सरकार 2047 तक भारत को **शीर्ष 5 जहाज़ निर्माण राष्ट्रों** में शामिल करने की दिशा में कार्यरत है
- **समर्थन तंत्र:**
    - ₹25,000 करोड़ का **Maritime Development Fund**
    - **मेगा क्लस्टर योजनाएँ**
    - **कस्टम ड्यूटी में छूट**
    - बड़े जहाजों को **बुनियादी ढांचा (Infrastructure) का दर्जा**
- **वैश्विक सहयोग:**
    - विदेशी कंपनियों के साथ **साझेदारी**
    - **निजी निवेश** को बढ़ावा

भारत में समुद्री इंजन के आयात से जुड़ी प्रमुख चिंताएँ:

- **तकनीकी निर्भरता की स्थिति:** भारत विदेशी कंपनियों पर न केवल इंजन खरीदने के लिए, बल्कि उनके डायग्नोस्टिक्स, सॉफ्टवेयर अपडेट्स और स्पेयर पार्ट्स के लिए भी निर्भर है।
    - इन इंजनों में प्रोप्रायटरी ECU (Electronic Control Units), बंद-स्रोत सॉफ़्टवेयर, और बौद्धिक संपदा से संरक्षित घटक होते हैं।
    - इससे भारत एक स्थायी तकनीकी निर्भरता की स्थिति में फँस जाता है।
- **आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान की आशंका:** भारत जिन पांच वैश्विक निर्माताओं पर निर्भर है, वह एक सीमित समूह है।
    - यह तकनीकी चोकपॉइंट बनाता है, जिससे किसी भी राजनयिक तनाव, व्यापार प्रतिबंध, निर्यात नियंत्रण, या आईपी लाइसेंसिंग विवाद की स्थिति में भारत का समुद्री जहाज निर्माण कार्यक्रम बाधित हो सकता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर निर्यात रोक: प्रमुख आपूर्तिकर्ता देश जैसे अमेरिका, यूरोपीय संघ और जापान ने निर्यात नियंत्रण नियम कड़े किए हैं।

- जैसे: EU Dual-Use Regulation, US EAR (Export Administration Regulations), और जापान का METI नियंत्रण।
- इन नियमों के तहत समुद्री इंजनों, उनके घटकों, सॉफ्टवेयर अपडेट्स, और स्पेयर पार्ट्स के निर्यात पर किसी भी समय रोक लगाई जा सकती है।

स्वदेशी समुद्री इंजन निर्माण में चुनौतियाँ:

आधुनिक इंजन डिज़ाइन की कमी: भारत के पास स्वदेशी डिज़ाइन क्षमताओं का अभाव है, जिससे विदेशी OEMs (Original Equipment Manufacturers) पर निर्भरता बनी रहती है।

- इससे सैन्य उपयोग के अनुसार अनुकूलन, स्थानीय जलवायु और परिचालन स्थितियों के लिए ऑप्टिमाइज़ेशन, तथा ईंधन-लचीले और स्वायत्त समुद्री प्रणालियों की ओर संक्रमण में बाधा आती है।

धातुकर्म सीमाएँ: भारत की घरेलू क्षमता उन्नत धातुओं जैसे हाई-क्रोमियम स्टील्स और निकेल-आधारित सुपरएलॉयज़ के निर्माण में सीमित है।

- ये सामग्रियाँ अत्यधिक तापीय और यांत्रिक तनाव सहने वाले मरीन इंजनों के लिए आवश्यक हैं।

ट्राइबोलॉजी और परिशुद्ध निर्माण: अत्याधुनिक घिसाव-रोधी कोटिंग्स और भारी इंजन घटकों की अल्ट्रा-प्रिसाइज़ मशीनीकरण के लिए उच्च तकनीक और औद्योगिक एकीकरण की आवश्यकता है, जो वर्तमान में भारत में अपर्याप्त है।

प्रशिक्षण प्रणाली और कौशल की खामियाँ:

- इंजीनियरिंग संस्थानों में अभी भी पुराने इंजन मॉडल्स का उपयोग प्रशिक्षण के लिए किया जाता है।
- आधुनिक डीकमीशन किए गए इंजन (जैसे आलंग शिप-ब्रेकिंग यार्ड से प्राप्त) का उपयोग कर व्यावहारिक कौशल और तकनीकी ज्ञान को अपग्रेड करने की आवश्यकता है।

म्यूनिसिपल बांड / Municipal Bonds

संदर्भ:
भारत का म्युनिसिपल बॉन्ड बाजार अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। वर्ष 1997 में इसकी शुरुआत के बाद से अब तक केवल लगभग ₹5,000 करोड़ की राशि के करीब 55 बॉन्ड ही जारी किए गए हैं।

क्या हैं Municipal Bonds?

- **परिभाषा:** स्थानीय सरकारों या राज्यों द्वारा जारी किए गए ऋण प्रतिभूतियाँ (Debt Securities)।
- **लोकप्रिय नाम:** इन्हें 'Munis' भी कहा जाता है।
- **उद्देश्य:** बुनियादी ढाँचे, स्कूल, परिवहन, जल व ऊर्जा जैसी सार्वजनिक परियोजनाओं के वित्तपोषण हेतु।
- **प्रमुख प्रकार:** *General Obligation Bonds (GO Bonds)* – जिनकी वापसी की गारंटी नगरपालिका के कर और गैर-कर राजस्व से होती है।
- **कर छूट:** अगर खरीदार नगरपालिका द्वारा निर्धारित शर्तों का पालन करता है, तो इन बांड्स पर मिलने वाला ब्याज *टैक्स-फ्री* होता है।

भारत में Municipal Bonds का विकास:

- **1997:** भारत का पहला म्युनिसिपल बांड – बेंगलुरु म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा जारी।
- **1998:** अहमदाबाद ने शहरी विकास हेतु बांड जारी किया।
- **2024 तक:**
    - *कर्नाटक* और *गुजरात* अग्रणी राज्य।
    - *मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश* भी पूल्ड फाइनेंसिंग मॉडल के ज़रिये बाज़ार में सक्रिय

नियमन (Regulation):

प्रमुख संस्था: SEBI (भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड)

प्रमुख नियमन:

- *2015 का नियमन:* "Issue and Listing of Debt Securities by Municipalities"
- *मुख्य प्रावधान:*
    - **Escrow Account** की अनिवार्यता
    - **वित्तीय पारदर्शिता:** नियमित वित्तीय खुलासे व ऑडिटेड अकाउंट्स जरूरी

बाजार को गहराई देने के प्रयास:

- **AMRUT 2.0 (MoHUA):**
    - हर ₹100 करोड़ की बांड निर्गम पर ₹13 करोड़ की प्रोत्साहन राशि
    - क्रेडिट रेटिंग को अनिवार्य सुधार के रूप में शामिल किया गया
- **वित्त मंत्रालय की योजना:** राज्यों को उनके वर्गीकरण के अनुसार प्रोत्साहन
- **उदाहरण:** इंदौर नगर निगम ने ₹244 करोड़ का सोलर प्रोजेक्ट हेतु पब्लिक इशू से बांड जारी किया – खुदरा निवेशक भी शामिल हुए।

वर्तमान स्थिति:

- **कुल निर्गम:** केवल 18 बांड्स, $575 मिलियन (2015 के बाद से)
- **तुलना (US से):**
    - 5000 म्युनिसिपल बांड्स
    - $4.1 ट्रिलियन का बकाया म्युनिसिपल ऋण
    - अमेरिका में 2/3rd नगरपालिका बुनियादी ढाँचा म्युनिसिपल बांड्स से वित्तपोषित

मुख्य बाधाएँ (Bottlenecks in India):

1. **वित्तीय अस्थिरता:** संचालन व रखरखाव खर्च तक पूरा नहीं होता
    - राजस्व धाराएँ कमजोर
2. **कमज़ोर क्रेडिट रेटिंग:** निवेश योग्य रेटिंग (A- से ऊपर) बहुत कम शहरों को मिलती है
3. **नियामकीय/प्रक्रियात्मक जटिलताएँ:** राज्य सरकार की स्वीकृति प्रक्रिया धीमी व अपारदर्शी
    - दिवालियापन/ऋण पुनर्गठन हेतु स्पष्ट कानूनी ढाँचे का अभाव
4. **पारदर्शिता की कमी:**
    - वित्तीय रिपोर्टिंग प्रणाली पुरानी
    - ऑडिट में देरी और स्टैंडर्ड फॉर्मेट की कमी
    - सार्वजनिक रूप से ऑडिटेड विवरण बहुत कम जारी होते हैं
5. **बाजार माँग व निवेशकों की रुचि कम:**
    - संस्थागत निवेशकों का वर्चस्व
    - खुदरा निवेशकों के लिए पर्याप्त कर छूट या रिटर्न का अभाव

लद्दाख में नौकरियों और निवास के लिए नए नियम / New Regulations for Jobs and Domicile in Ladakh

संदर्भ:

केंद्र सरकार ने लद्दाख की भूमि, रोजगार और सांस्कृतिक संरक्षण से संबंधित एक श्रृंखला of नियमों को अधिसूचित किया है। ये प्रावधान पिछले पाँच वर्षों से लद्दाख की नागरिक समाज द्वारा उठाई जा रही चिंताओं को संबोधित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास हैं, जिनका उद्देश्य क्षेत्र की पहचान, संसाधनों और स्थानीय हितों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

लद्दाख: संवैधानिक सुरक्षा की मांग की पृष्ठभूमि-

पृष्ठभूमि-

- **2019:** अनुच्छेद 370 को संसद द्वारा निष्क्रिय किए जाने के बाद, **लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश** (Union Territory) का दर्जा मिला, लेकिन **विधानसभा नहीं दी गई**।
- **संरचना:** लद्दाख में दो ज़िले –
  - **लेह:** बौद्ध बहुल
  - **कारगिल:** मुस्लिम बहुल

विरोध और मांगें-

- **2020 में व्यापक प्रदर्शन** हुए, जिनमें स्थानीय जनप्रतिनिधियों और संगठनों ने लद्दाख के लिए *संवैधानिक संरक्षण* की मांग की।

मुख्य मांगें-

1. लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा (Statehood)
2. संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करना
   - इससे **जनजातीय दर्जा** और **सांस्कृतिक स्वायत्तता** मिलेगी
3. स्थानीय लोगों के लिए रोजगार में आरक्षण
4. लेह और कारगिल दोनों को अलग-अलग लोकसभा सीटें देना

लद्दाख के नए विनियम, 2025: क्षेत्रीय पहचान और सशक्तिकरण की दिशा में कदम

1. लद्दाख सिविल सेवा विकेंद्रीकरण एवं भर्ती (संशोधन) विनियम, 2025-

- **प्रथम बार डोमिसाइल अनिवार्यता** लागू की गई है, केवल **स्थानीय निवासियों को सरकारी नौकरियों** में प्राथमिकता मिलेगी।
- **डोमिसाइल की परिभाषा:**
  - पिछले **15 वर्षों से लद्दाख में निवास** करने वाला व्यक्ति
  - **7 वर्षों तक अध्ययन** किया हो और **कक्षा 10 या 12 की परीक्षा लद्दाख से दी हो**
  - **केंद्र सरकार के वे कर्मचारी**, जिन्होंने **लद्दाख में कम-से-कम 10 वर्ष सेवा दी हो**, उनके **बच्चे/पति या पत्नी**
  - उपर्युक्त सभी वर्गों के **संतान और जीवनसाथी**

2. लद्दाख सिविल सेवा डोमिसाइल प्रमाण पत्र नियम, 2025-

- डोमिसाइल प्रमाण पत्र प्राप्त करने की **प्रक्रिया और आवश्यक दस्तावेजों** को निर्धारित करता है।
- **तहसीलदार** प्रमाण-पत्र जारी करेगा; **उपायुक्त (DC)** अपील प्राधिकरण होंगे।

3. लद्दाख आरक्षण (संशोधन) विनियम, 2025-

- SC, ST, OBC और अन्य पिछड़ा वर्गों के लिए आरक्षण की सीमा 85% तक तय की गई है।
- **EWS (आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग)** के लिए अतिरिक्त **10% आरक्षण** अलग से मान्य रहेगा।

4. लद्दाख राजकीय भाषाएँ विनियम, 2025-

- **अधिकारिक भाषाएँ घोषित की गईं:** अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दू, भोटी, पुर्गी
- **संस्थानिक समर्थन** के साथ इन भाषाओं के संरक्षण और प्रचार हेतु कदम:
  - **शिना, ब्रोक्सकट, बाल्टी और लद्दाखी** जैसी भाषाओं के संरक्षण को बढ़ावा दिया जाएगा।

5. लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद (संशोधन) विनियम, 2025-

- **LAHDC अधिनियम, 1997** में संशोधन के तहत:
  - **लेह और कारगिल की LAHDC परिषदों में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटें आरक्षित** होंगी।
  - यह **रोटेशन के आधार** पर लागू होगा।

नई नियमावली की सीमाएँ:

1. संवैधानिक संरक्षण का अभाव
2. भूमि सुरक्षा का अभाव
3. विधायी स्वायत्तता नहीं
4. सांस्कृतिक संरक्षण केवल प्रतीकात्मक

भारत में बिल्डिंग-इंटीग्रेटेड फोटोवोल्टिक्स / Building-Integrated Photovoltaics in India

संदर्भ:

हाल ही में यह देखा गया है कि **भारत में बिल्डिंग-इंटीग्रेटेड फोटोवोल्टिक्स (BIPV)** को बड़े पैमाने पर अपनाने की पर्याप्त क्षमता है। इसका प्रमुख कारण देश का मजबूत निर्माण आधार (Strong Manufacturing Base) और सतत विकास (Sustainability) के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता है, जो स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में भारत को एक अग्रणी स्थान दिला सकती है।

Building-Integrated Photovoltaics (BIPV): भारत के शहरी भविष्य के लिए एक सौर समाधान:

BIPV क्या है?

- **Building-Integrated Photovoltaics (BIPV)** वह प्रणाली है जिसमें सौर (फोटovoltaic) पैनलों को **इमारत की संरचना (जैसे छत, कांच, रेलिंग, क्लैडिंग, फसाड)** में *प्रत्यक्ष रूप से एकीकृत* किया जाता है।
- ये पारंपरिक निर्माण सामग्री की जगह लेते हुए **बिजली का उत्पादन** भी करते हैं – जिससे *भवन खुद ऊर्जा स्रोत* बन जाता है।

मुख्य विशेषताएं-

- **आकर्षक और अनुकूलन योग्य डिज़ाइन:** रंग, आकार, पारदर्शिता आदि को कस्टमाइज किया जा सकता है, जिससे वास्तुशिल्प सौंदर्य बना रहता है।
- **ऊष्मा नियंत्रण:** अर्ध-पारदर्शी पैनल सूरज की गर्मी को कम कर, *एयर कंडीशनिंग की जरूरत* घटाते हैं।
- **भू-उपयोग में कुशल:** सीमित स्थान वाले शहरी, आवासीय व वाणिज्यिक भवनों के लिए उपयुक्त।
- **निर्माण में एकीकरण:** छत, खिड़की, छज्जा आदि में सीधे सौर पैनलों को शामिल किया जा सकता है।

भारत के लिए महत्त्व-

- **रूफटॉप स्थान की कमी** और **जनसंख्या घनत्व** को देखते हुए, BIPV भारत के लिए आदर्श है।
- **फसाड (दक्षिण दिशा)** पर लगे पैनल, रूफटॉप की तुलना में *चार गुना ज्यादा बिजली* उत्पन्न कर सकते हैं।
- **बिना छत वाले घरों** के लिए भी विकल्प – जर्मनी की तरह **बालकनी सोलर पैनलों** से बिजली बिलों में कटौती संभव।
- **ऊष्मा अवरोधक लाभ:** अंदरूनी तापमान नियंत्रण बेहतर, ऊर्जा की बचत।

चुनौतियाँ:

- **उच्च प्रारंभिक लागत**, **नीतिगत समर्थन की कमी**, और **तकनीकी क्षमताओं की कमी**।
- **स्थानीय विनिर्माण पर निर्भरता नहीं**, अधिकतर BIPV *आयात पर निर्भर*।
- **स्पष्ट मानकों, जागरूकता और प्रोत्साहन योजनाओं का अभाव**।

सुझाव व आगे की राह-

- **309 GW संभावित क्षमता** वाले मौजूदा भवनों को लक्ष्य बनाकर *BIPV को प्राथमिकता* दी जानी चाहिए।
- **सरकारी सब्सिडी बढ़ाई जाए** (जैसे सियोल में 80% तक की लागत सरकार वहन करती है)।
- **BIPV को भवन कोड में अनिवार्य किया जाए**, खासकर वाणिज्यिक/औद्योगिक भवनों में।
- **पायलट प्रोजेक्ट्स**, **पब्लिक-प्राइवेट भागीदारी**, और **स्थानीय निर्माण** को बढ़ावा देने हेतु R&D व प्रोत्साहन आवश्यक।
- **REESCO मॉडल** (Renewable Energy Service Company) और **लॉन्ग-टर्म पावर खरीद अनुबंधों** से वित्तीय व्यवहार्यता बढ़ाई जा सकती है।

निष्कर्ष:

BIPV (Building-Integrated Photovoltaics) ऊर्जा-सक्षम भवनों की दिशा में एक **परिवर्तनकारी समाधान** है, जो *सौंदर्य* और *उपयोगिता* दोनों को एक साथ जोड़ता है। इसकी सफलता के लिए आवश्यक है:

- **मजबूत नीतिगत समर्थन**
- **वित्तीय प्रोत्साहन योजनाएं**
- **जन-जागरूकता अभियान**

दाओजली हैडिंग / Daojali Hading

संदर्भ:

हाल ही में असम में एक नवपाषाण कालीन (Neolithic) आवास स्थल की खोज हुई है, जहाँ प्रारंभिक धातुकर्म (Early Metallurgy) के प्रमाण भी मिले हैं। यह खोज पूर्वोत्तर भारत के प्राचीन इतिहास और सांस्कृतिक विकास को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है।

Daojali Hading: असम में एक प्रमुख नवपाषाण कालीन स्थल

स्थान और खोज-

- **स्थान:** लांगटिंग-मूपा रिजर्व फॉरेस्ट, दीमा हासाओ ज़िला, असम
- **खोज का समय:** 1960 के दशक में लुमडिंग-हाफलोंग सड़क निर्माण के दौरान यह स्थल उजागर हुआ था।

पुरातात्विक महत्व-

- **काल:** यह स्थल लगभग **2700 वर्ष पुराना** है, नवपाषाण युग से संबंधित।
- **प्रमुख खोजें:**
  - *पॉलिश किए गए डबल-शोल्डर्ड सेल्ट्स*
  - *कॉरड-मार्क्ड मिट्टी के बर्तन*
  - *ओखली और मूसल (Mortars & Pestles)*
  - *जेडाइट पत्थर (Jadeite stone)* – यह पत्थर आमतौर पर पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया में पाया जाता है।

धातुकर्म साक्ष्य-

- **भट्ठी और आयरन स्लैग (furnace & iron slag)** की खोज:
  - यह संकेत देता है कि **धातुकर्म गतिविधियाँ** भी यहाँ होती थीं।
  - इससे यह सिद्ध होता है कि यह स्थल **पूर्वोत्तर भारत का एक प्रमुख प्रागैतिहासिक बस्ती केंद्र** था।

संस्कृति से संबंध: इस स्थल से मिले पुरावशेषों का संबंध **पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया की नवपाषाण सांस्कृतिक परंपरा** से देखा गया है।

खीर भवानी (Kheer Bhawani) महोत्सव

संदर्भ:

ज्येष्ठ अष्टमी के पावन अवसर पर प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला **खीर भवानी महोत्सव** इन दिनों जम्मू-कश्मीर के गांदरबल स्थित खीर भवानी मंदिर में उत्साहपूर्वक आयोजित हो रहा है। यह पर्व कश्मीरी हिंदू समुदाय के लिए आस्था और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक माना जाता है।

Kheer Bhawani मंदिर: एक पवित्र तीर्थ स्थल-

स्थापना और इतिहास-

- **निर्माण:** मूल मंदिर का निर्माण **महाराजा प्रताप सिंह** द्वारा 1912 के आसपास किया गया था।
- **पुनर्निर्माण:** बाद में इसे **महाराजा हरि सिंह** ने सजाया और पुनर्निर्मित किया।

देवी को समर्पण-

- यह मंदिर **देवी रज्ञा (Ragnya Devi)** को समर्पित है, जिन्हें **देवी दुर्गा** का एक अवतार माना जाता है।

प्रमुख विशेषता-

- मंदिर के केंद्र में **षट्कोणीय (hexagonal) जल-स्रोत** स्थित है, जिसे पवित्र माना जाता है।
- श्रद्धालु इस जल को अत्यंत श्रद्धा से पूजते हैं।

नाम और प्रसाद की उत्पत्ति-

- मंदिर और उससे जुड़ा उत्सव, दोनों का नाम **'खीर'** (एक मिठाई) से पड़ा है।
- यही *खीर* भक्तों को **प्रसाद** के रूप में वितरित की जाती है।

C CARES Version 2.0 पोर्टल

संदर्भ:

कोयला मंत्रालय ने भविष्य निधि (Provident Fund) और पेंशन वितरण प्रक्रिया को अधिक सरल और पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से **C CARES पोर्टल के नए संस्करण (Version 2.0)** की शुरुआत की है। यह वेब पोर्टल कर्मचारियों को तेज, कुशल और डिजिटल सेवाएं प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

C CARES Version 2.0 पोर्टल:

मुख्य विशेषताएँ-

- **उद्देश्य:** कोयला क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए PF/पेंशन वितरण प्रक्रिया को सरल बनाना।
- **एकीकृत मंच:** यह पोर्टल कर्मचारियों, प्रबंधन और Coal Mines Provident Fund Organisation (CMPFO) को एक डिजिटल मंच पर लाता है।
- **विकासकर्ता:** इस पोर्टल को C-DAC (Centre for Development of Advanced Computing) द्वारा विकसित और डिज़ाइन किया गया है।

प्रक्रिया और कार्यप्रणाली-

- **रीयल-टाइम ट्रैकिंग:** दावा (Claim) की स्थिति को तत्काल ट्रैक किया जा सकता है।
- **निपटान में तेजी:** इससे सेटलमेंट समय कम होता है, जिससे सामाजिक सुरक्षा से जुड़े लाभ शीघ्र मिलते हैं।

प्रमुख लाभ-

- पारदर्शिता में वृद्धि
- जवाबदेही सुनिश्चित
- प्रक्रियाओं में दक्षता
- कोयला क्षेत्र के श्रमिकों को बेहतर सामाजिक सुरक्षा

डिजिटल भारत की दिशा में कदम-

- यह पोर्टल **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन'** और **डिजिटल इंडिया** के विज़न को साकार करता है।

निष्कर्ष: C CARES Version 2.0 कोयला श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा प्रणाली को **डिजिटल, पारदर्शी और प्रभावी** बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

कृषि सहयोग केंद्र / Agri Cooperation Centre

संदर्भ:

अंतर्राष्ट्रीय शुष्क क्षेत्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (ICRISAT) ने विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (RIS) के सहयोग से **दक्षिण-दक्षिण कृषि सहयोग के लिए उत्कृष्टता केंद्र (ICRISAT Centre of Excellence for South-South Cooperation in Agriculture - ISSCA)** की शुरुआत की है। यह केंद्र वैश्विक दक्षिण के देशों के बीच कृषि नवाचार, ज्ञान साझाकरण और सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

South-South Cooperation in Agriculture: उद्देश्य और मुख्य विशेषताएँ:

उद्देश्य-

- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग (South-South Cooperation - SSC)** को बढ़ावा देना।
- सिद्ध और प्रभावशाली कृषि नवाचारों को **स्केलेबल (विस्तृत स्तर पर लागू योग्य)** समाधानों में रूपांतरित करना।

मुख्य फोकस क्षेत्र:

1. **कम लागत, उच्च प्रभाव वाली तकनीकों का प्रचार-प्रसार।**
2. **सूखा प्रभावित और विकासशील क्षेत्रों** के लिए उपयुक्त **नीतिगत मॉडल और क्षमता निर्माण टूल्स** को बढ़ावा देना।
3. **ग्लोबल साउथ** के देशों के बीच *पीयर-टू-पीयर लर्निंग* और **ज्ञान साझा करने** को प्रोत्साहन देना।

डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका-

- एक डिजिटल पोर्टल के रूप में कार्य करता है जो सत्यापित नवाचारों का एक जीवंत भंडार (Living Repository) प्रदान करता है।

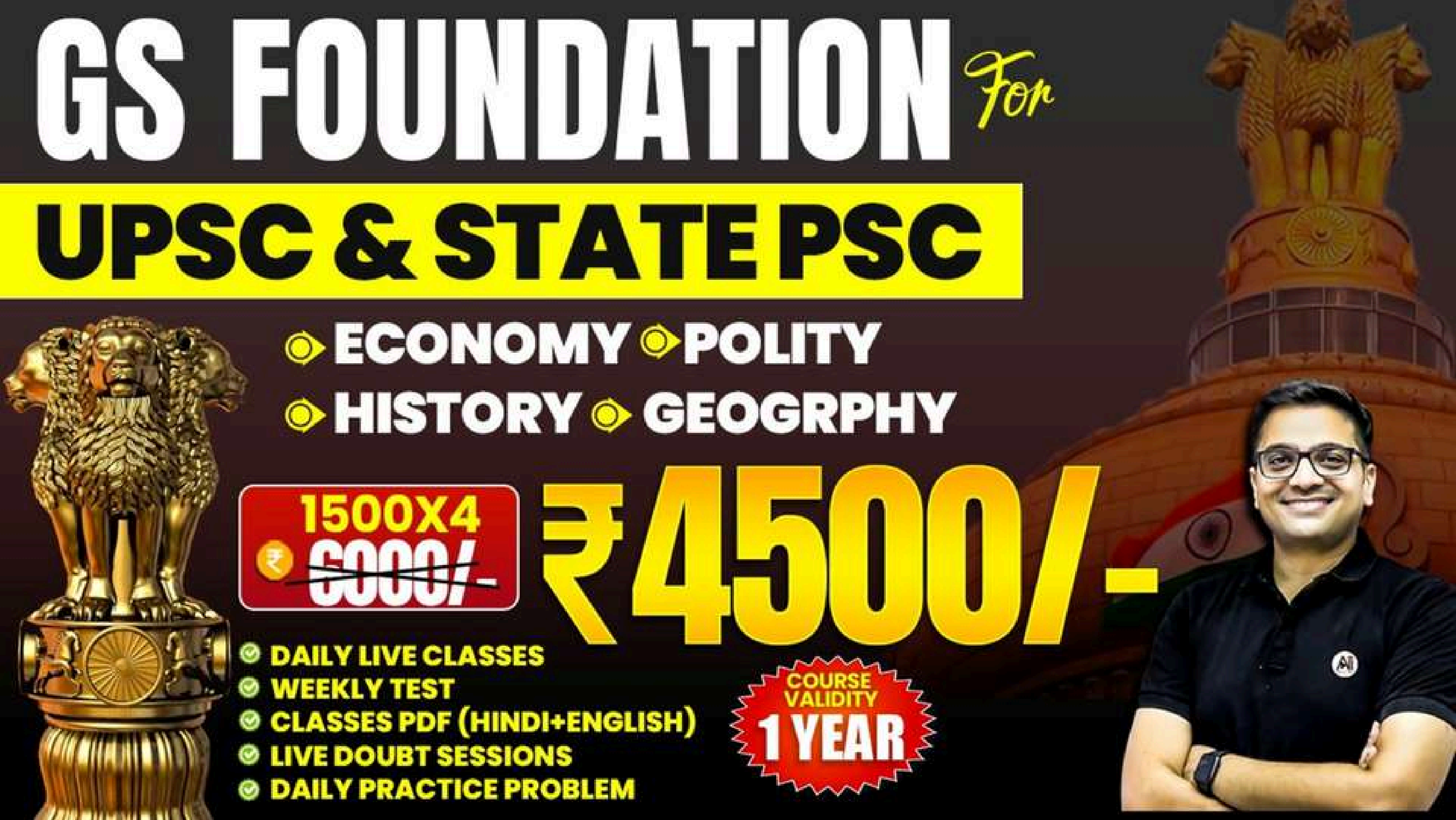
GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
ECONOMY
POLITY
HISTORY
GEOGRPHY
1500X4
₹ 6000/-
₹4500/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

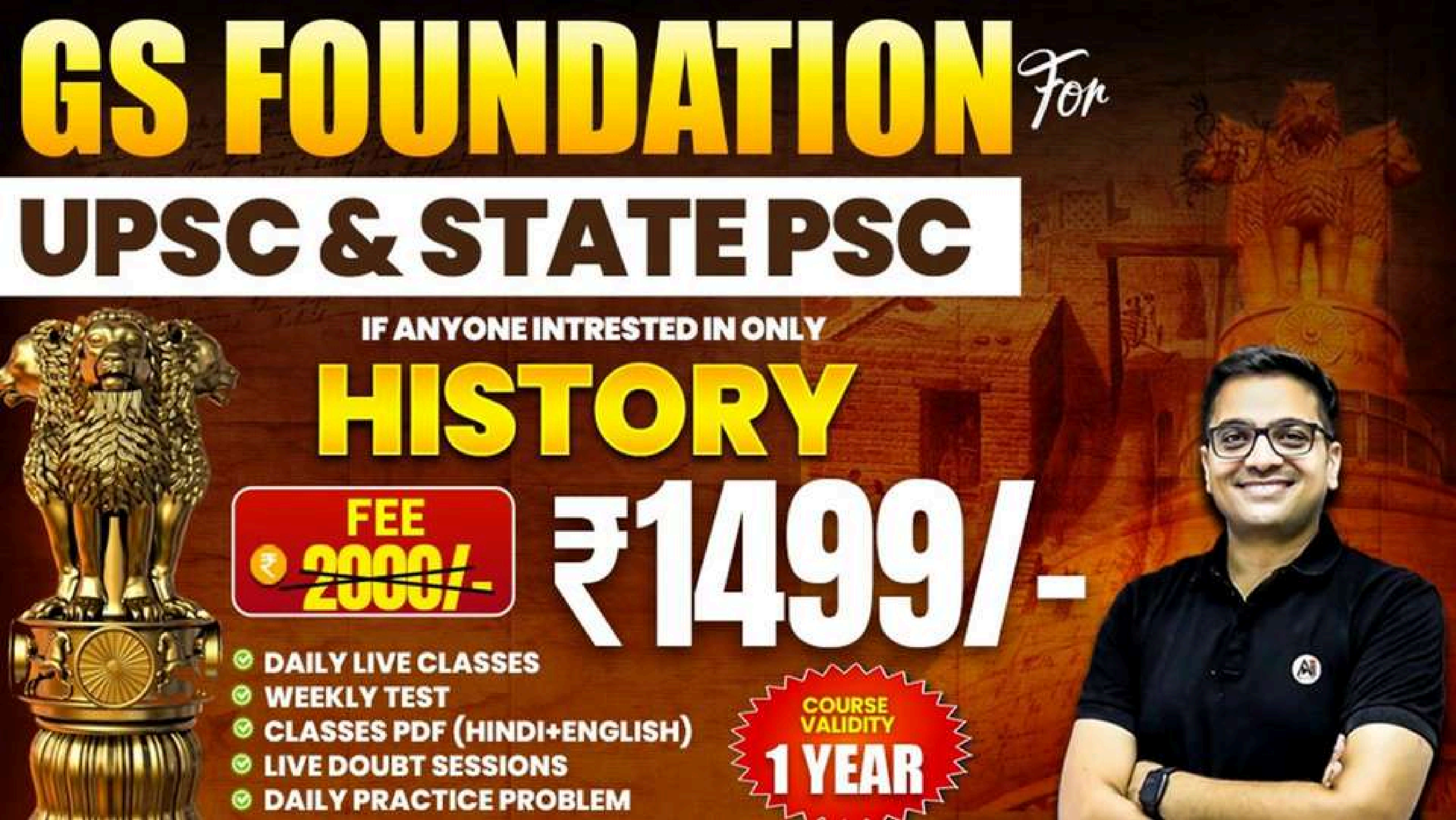
GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
IF ANYONE INTRESTED IN ONLY
HISTORY
FEE
₹ ~~2000/-~~
₹1499/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
IF ANYONE INTRESTED IN ONLY
ECONOMY
FEE
₹ 2000/-
₹1499/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

जानिए
भारतीय संविधान
CONSTITUTION
OF
INDIA
मात्र
1499/- Year
Enroll Now !
1 year validity

GS FOUNDATION
Hand Written Notes
Pathshala
भारतीय भूगोल
भौतिक तथा विश्व भूगोल
BEST OFFER
1999Rs
4 पुस्तकों का
सम्पूर्ण सेट
अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
Bilingual
By Ankit Avasthi Sir

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण
RNA : Real News Analysis
MONTHLY CURRENT AFFAIRS
UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
MONTH
जनवरी, 2025
By Ankit Avasthi Sir
MONTHLY MAGAZINE
FREE!
अधिक जानकारी के लिए दिए गए
नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
Billingual
ANKIT AVASTHI SIR

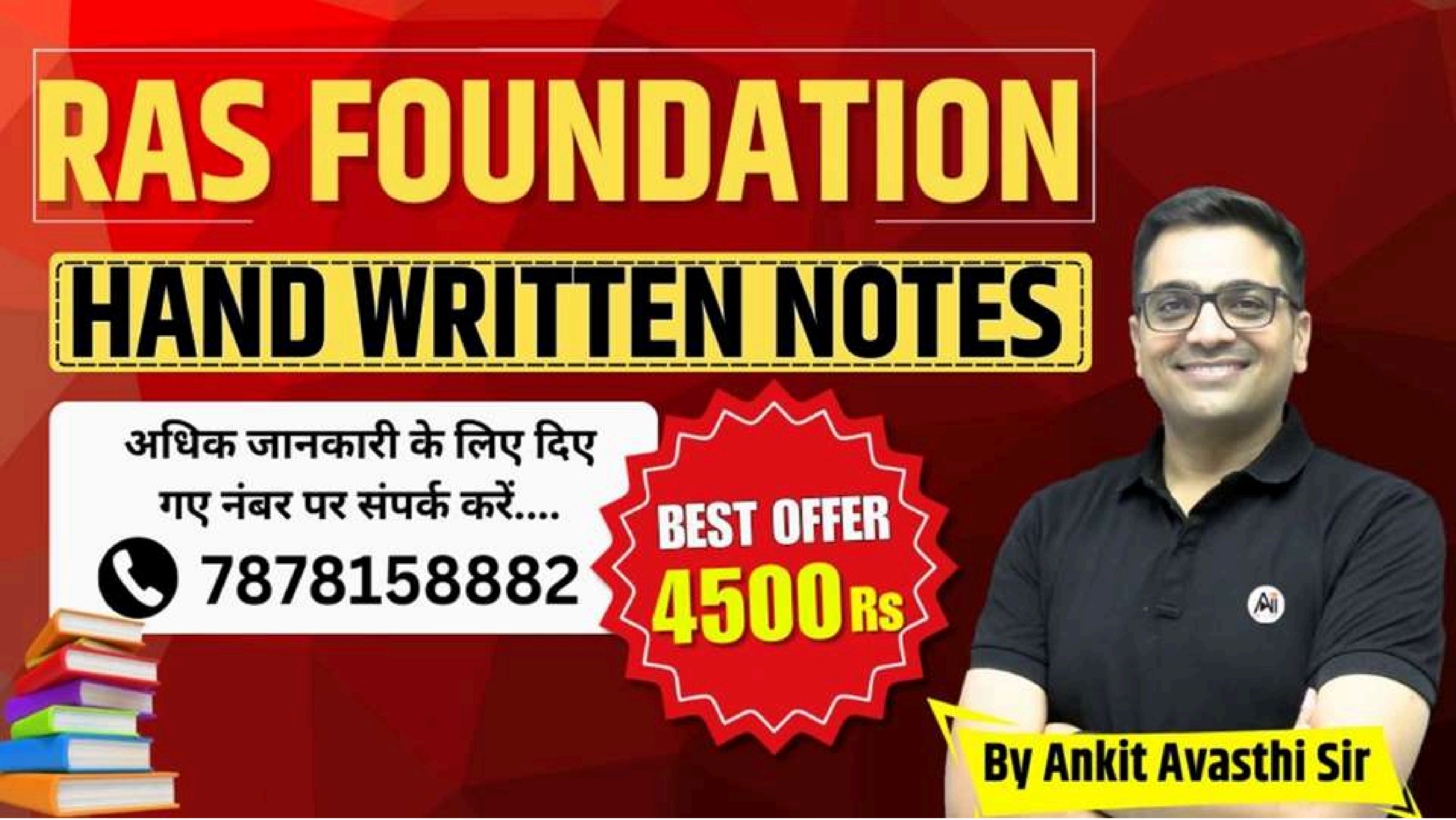
RAS FOUNDATION
HAND WRITTEN NOTES
अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
BEST OFFER
4500 Rs
By Ankit Avasthi Sir

RRB NTPC
TEST SERIES

- 100+ Mock Test
- 78 Sectional Test
- 40+ years PYPs
- 60+ Current affairs

TEST

Only 99 Per Year

Buy Now

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

CALL CENTRE

HOW MAY I HELP YOU

7878158882

AnkitInspiresIndia

Download "Apni Pathshsla" app now!

Follow us: